## विचार बिन्दु

**धीरज सारे आनंदों और शक्तियों का मूल है। –फ्रैंकलिन**

# शोषण का यह सिलसिला आखिर कब रुकेगा?

इस वर्ष हम देश की स्वतंत्रता का 75वां वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। अब भी कई घटनाएं ऐसी सामने आती हैं, जिनसे यह प्रश्न उठता रहता है कि देश में निर्धन, असहाय, कमजोर का शोषण कब तक चलेगा और यह कैसे रुकेगा या रुकेगा भी या नहीं? इसी संबंध में कुछ घटनाएं में पाठकों के साथ साझा करना चाहता हूं।

हमारे यहां पर बिहार का एक युवक काम करता है। इसने अपनी छोटी बहन के विवाह के लिए एक फाइनेंस कंपनी से 80000 का लोन लिया। कुछ दिन पहले उससे बात करने पर पता चला कि फाइल बनाने और प्रोसेसिंग चार्जेस के नाम पर 5000 काटने के बाद उसे कुल 75000 दिए गए। इसकी किश्त प्रतिमाह 4850 थी और उसे यह कर्जा कुल 24 माह में चुकाना था। मुझे लगा कि ब्याज दर अत्यधिक है। इस कारण मैंने उसे यह कहा कि वह कंपनी में पता करें कि यदि वह बकाया सारा पैसा साथ चुका दे, तो उसे कितना पैसा देना होगा? उसने तीन माह पूर्व ही लोन लिया था। उसने कंपनी में जाकर पता किया तो उसे बताया गया कि तीन माह में लगभग 15000 जमा कराने के बाद भी उसके विरुद्ध 78591 बकाया हैं। यदि वह 'अदेया प्रमाण पत्र' चाहता है उसे यह राशि जमा करानी होगी। मैंने उसे यह राशि दे दी और उसने जमा करा कर अदेयता का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। 15000 रुपये चुकाने के बाद भी इतनी बकाया के बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं होने के कारण मैंने कंपनी के प्रतिनिधि से फोन पर बात की। उसने बताया कि कंपनी की ब्याज की दर 34 प्रतिशत है क्योंकि उसके पास गारंटी देने या गिरवी रखने के लिए कुछ भी संपत्ति नहीं थी। वैसे भी, किसी निर्धन व्यक्ति के सम्पत्ति होती ही कहाँ है जो वह किसी फाइनेंस कंपनी अथवा बैंक के पास गिरवी रख सके? एक और जहां सामान्य निवेशक को अपने बैंक में जमा राशि पर 3-4 प्रतिशत अथवा एफ.डी.आर. पर कुल 7 प्रतिशत के लगभग ब्याज प्राप्त होता है और बड़े-बड़े उद्योगपतियों को लाखों, करोड़ों रुपए लगभग 8-10 प्रतिशत की ब्याज दर पर उपलब्ध हो जाते हैं, वहीं एक निर्धन युवा को 34 प्रतिशत वार्षिक की दर पर ब्याज देने हेतु बाध्य होना पड़े, तो यह पीड़ा पहुंचाने वाली बात है। शायद इसी कारण, ऊंची ब्याज दर पर ऋण देने वाले साहूकार पनपते हैं और उन्हें साधारण व्यक्तियों का शोषण करने का अवसर मिलता है। जब फाइनेंस कंपनी कानूनी रूप से 34 प्रतिशत ब्याज ले रही है तो साहूकार 20-25 प्रतिशत की ब्याज दर तो बड़ी आसानी से वसूल कर ही सकते हैं।

ऐसे समय में, जब भारत सरकार के मंत्री और प्रधानमंत्री, हर संबोधन में यह कहते हैं कि मुद्रा लोन हेतु 10 लाख तक की राशि बिना किसी गारंटी एवं जमानत के बेरोजगारों को मिल सकती है, किंतु पारिवारिक आवश्यकता होने पर किसी व्यक्ति को ऋण लेने पर 34 प्रतिशत की दर पर ब्याज देना पड़े, तो इसे क्या कहा जाएगा? यदि ऐसी ही परिस्थितियां बनी रहीं, तो यह संभावना नगण्य है कि गरीब व्यक्ति, कभी गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सके।

अडानी प्रकरण में शेयरों के भाव में अचानक कमी आने के कारण जिस प्रकार एसबीआई और एलआईसी में निवेश करने वाले सामान्य निवेशकों को खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, वह भी प्रभावी लोगों द्वारा सिस्टम को अपने पक्ष में करके साधारण व्यक्तियों के शोषण करने का ही एक उदाहरण है। कृत्रिम रूप से अपने शेयर के भाव 4200 रुपये तक बढ़ा दिए गए और इसके बाद हिंडन बर्ग की रिपोर्ट के फलस्वरूप यह गिरकर 1200 रुपये हो गए। इसी कारण यह सारी समस्या उत्पन्न हुई है। देश की प्रमुख संस्था सेबी से यह अपेक्षा रहती है कि वह साधारण निवेशकों के हितों की रक्षा करे। जब अडानी समूह में शैल कंपनियों के माध्यम से बड़ी धनराशि लगाई जा रही थी, उस समय सेबी का ध्यान न जाना या उसके द्वारा जानबूझकर ध्यान न दिया जाना, निवेशकों के हित पर कुठाराघात ही सिद्ध हो रहा है। उल्लेखनीय है कि एलआईसी और एस बी आई द्वारा बहुत बड़ी धनराशि अडानी ग्रुप की कंपनियों में निवेश की गई है। अत: अडानी के शेयरों में गिरावट का प्रभाव साधारण निवेशकों पर पड़ना ही था।

**शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जो शोषण से मुक्त हो। शोषण का यह वातावरण इतना सर्वव्यापी है कि स्वास्थ्य का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि जो भी सत्ता - बल धन - बल और शारीरिक - बल का मालिक है उसने कमजोर, वंचितों का शोषण करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान लिया है।**

प्रश्न तो यह है कि हमारी व्यवस्था, संपन्न और प्रभावी लोगों को शोषण करने का अवसर प्रदान क्यों करती है? हाल ही में सेबी ने अरशद वारसी एवं उसकी पत्नी के विरुद्ध शेयरों में जानबूझकर बढ़ोतरी करा के उन्हें बेचकर कुछ लाख रुपए कमाने के आरोप में गंभीर कार्यवाही की है। यदि ऐसी ही सावधानी अडानी कंपनियों के शेयरों में लगने वाले धन के बारे में कर ली जाती तो आज यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती। यह तो भला हो सर्वोच्च न्यायालय का, जिसने इस प्रकरण में निष्पक्ष, ठोस जांच करने हेतु अपने स्तर पर एक समिति का गठन किया है एवं सेबी को भी आदेश दिए हैं कि वह इस बारे में जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करे। इससे आशा अवश्य जगी है कि शायद एलआईसी आदि कंपनियों में निवेश करने वाले साधारण निवेशकों के हितों की रक्षा हो सकेगी।

शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जो शोषण से मुक्त हो। कानूनन, कोई मालिक अपने श्रमिक/अधीनस्थ कर्मचारी से एक निश्चित समय अवधि से अधिक कार्य नहीं करवा सकता है, किन्तु किस प्रकार 12-14 घंटों तक दुकानों, ढाबों या अन्य कार्यस्थलों पर काम लिया जाता है, यह सर्वविदित है। शिक्षण संस्थानों में अच्छे-खासे उच्च शिक्षित शिक्षकों का शोषण आम बात है। पीएचडी जैसी उच्च डिग्रीधारक युवा 10-12000 रुपए मासिक के वेतन पर कार्य करने को मजबूर हैं।

माना जाता है कि शोषण होने पर व्यक्ति पुलिस या न्यायालय की शरण ले सकता है लेकिन ये ही कई बार अतिरिक्त शोषण के कारण बन जाते हैं। पीड़ित, परेशान व्यक्ति जब न्याय पाने की आशा में पुलिस थाने पर जाता है तो वहां भी उसे कई बार अर्थिक, मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। जब पुलिस द्वारा अपराधियों को संरक्षण और पीड़ित शिकायत कर्ता में भय उत्पन्न किया जाय तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि देश के नागरिकों को शोषण से मुक्ति कौन दिलाएगा? न्याय प्रक्रिया जटिल और महँगी होने के कारण शोषित के लिए न्याय प्राप्त करना सम्भव नहीं होता।

बच्चे, जिनके हाथ में पुस्तक और खिलौने होने चाहियें, यदि ढाबों में देर तक झूठे बर्तन साफ़ करने के लिए मजबूर हों, तो अमृत महोत्सव मनाना बेमानी सा लगता है। विश्वविद्यालयों में शोधार्थियों के शारीरिक शोषण तक की खबरें लगातार आती रही हैं। हालत तो यह हो गई है कि विद्यालयों तक में बालिकाएं यौन शोषण से नहीं बची हैं।

शोषण का यह वातावरण इतना सर्वव्यापी है कि स्वास्थ्य का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। साधारण परिवार के मरीज़ों को किसी न किसी नाम से अत्यधिक धनराशि इन संस्थानों को देने हेतु बाध्य होना पड़ता है चाहे वह आवश्यक-अनावश्यक जांचे हों, महंगी दवाएँ हों या फिर अस्पतालों में बिना आवश्यकता के अधिक समय तक भर्ती रखना हो। अस्पताल में विभिन्न प्रकार की महंगी दवाइयों के नाम पर गरीब मरीजों को कैसे लूटा जाता है, इसके बारे में समाचार हम नियमित रूप से समाचार पत्रों में पढ़ते रहते हैं। शोषण की इसी प्रवृत्ति का परिणाम है कि देश की संपत्ति बहुत तेजी से कुछ ही लोगों के हाथों में सिमटती जा रही है और अधिकांश जनसंख्या पहले से कहीं अधिक गरीब होती जा रही है। अमीर और गरीब की बढ़ती खाई इसी शोषणकारी प्रवृत्ति का परिचायक है।

राज्य का दायित्व होता है, वंचित और कमजोर वर्ग के हितों की रक्षा करे और उनको इतना सक्षम बनाएँ कि वे स्वयं अपने हितों की रक्षा कर सकें। इन दोनों ही कामों में केंद्र, राज्य सरकार एवं उनकी विभिन्न संस्थाएं सफल नहीं रही हैं, बल्कि सामान्यतया वे, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, शोषणकारी वर्गों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं।

गरीबी के कारण एवं गांवों में रोजगार के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं होने के कारण कई युवा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से एवं दूसरे राज्यों से भी जयपुर जैसे बड़े शहरों में आकर छोटा-मोटा काम करके या फल सब्जी बेचकर अपना गुजारा करने का प्रयास करते हैं। अतिक्रमण हटाने के नाम पर कई बार इन लोगों के ठेलों को उलट दिया जाता है और फल सब्जियों को जप्त कर लिया जाता है। इससे बड़ी मुश्किल से गुजारा चलाते वाले लोग बहुत संकट में आ जाते हैं।

पुलिस, नगर निगम अथवा जेडीए के अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई का सारा खामियाजा सामान्यतया गरीब व्यक्तियों को ही भुगतना पड़ता है क्योंकि जो व्यक्ति आर्थिक अभाव के कारण महंगी भूमि नहीं खरीद पाते, वे ही मजबूरी में सरकारी भूमि पर छोटा, कच्चा घर बनाकर रहते हैं। दूसरी ओर, जिन प्रभावशाली लोगों द्वारा आलीशान बहुमंजिला इमारतें सभी कानून कायदों को धता बताकर बना ली जाती हैं, उनके विरुद्ध कार्रवाई करने में जेडीए, नगर निगम अथवा राज्य के अन्य संस्थाओं का ध्यान नहीं जाता है। स्पष्ट है कि कानून की पालना भी इसी सिद्धांत को आधार पर होती दिखाई देती है कि 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं'। परिणाम स्वरुप, शोषण तो उसी का होना है जो समर्थ नहीं है।

बच्चों के शोषण का एक उदाहरण हाल ही में सामने आया। एक संस्थान द्वारा प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित करने हेतु एक आयोजन रखा गया जिसमें विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को पुरस्कार लेने हेतु आमंत्रित किया गया था। बच्चों से यह कहा गया था कि वे 9:00 बजे सुबह तक समारोह स्थल पर पहुंच जाएं। स्वाभाविक है, वहां पहुंचने के लिए बच्चों को अपने घरों से 7:00 या 8:00 बजे निकलना पड़ा। समारोह स्थल पर पहुंचते पर पता चला कि समारोह का वास्तविक समय तो 11:30 का था। इसके बाद यह समारोह लगभग 3 घंटे चला और 3:00 बजे तक समाप्त हुआ। इसके पश्चात, बच्चों को वितरण हेतु जो आलू-पूरी के पैकेट दिए गए जो खाने लायक नहीं थे क्योंकि उनमें रखी हुई आलू की सब्जी गर्मी के कारण खराब हो चुकी थी। बड़े-बड़े नेताओं और अधिकारियों के स्वागत के लिए बच्चों को कई घंटे इंतजार कराया जाता है। इसे भी शोषण ही कहा जाएगा।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि जो भी सत्ता - बल धन - बल और शारीरिक - बल का मालिक है उसने कमजोर, वंचितों का शोषण करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान लिया है। देश को अपने नागरिकों के साथ आगे बढ़ना है तो इस शोषणकारी व्यवस्था को समाप्त करना ही होगा।

**–अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# प्रकृति से रुबरु होंगे तो बढ़ेगी इम्यूनिटी

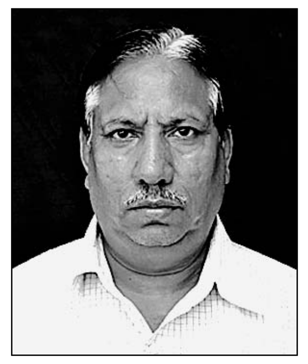

**डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**

यदि चिकित्सकों की माने तो देश में अधिकांश लोगों में विटामिन डी की डेफिसिएंसी है। हो सकता है यह आंकड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण होने के साथ ही अधिक अपर साइड में हो पर इतना तो साफ है कि देश दुनिया में विटामिन डी की कमी के आंकडे दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। विटामिन डी जिसका सबसे सहज स्रोत केवल कुछ मिनटों तक धूप सेवन से प्राप्त हो सकता है आज उसी की कमी से रोगियों की संख्या अधिक होती जा रही है। दरअसल प्रकृति के अनमोल उपहारों से हम लगातार दूर होते जा रहे हैं। अत्यधिक भागमभाग, शहरीकरण, सीमेंट कंकरीट की गगनचुंबी इमारतें प्रकृति के उपहार से हमें वंचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मिट्टी, पानी, धूप, की सहजता को छोड़कर हम दवाओं, केमिकल्स में ईलाज ढूंढने लगे हैं। दिल्ली एम्स के हालिया अध्ययन में सामने आया है कि हार्ट फेलियर के मरीजों को पर्याप्त मात्रा में विटामिन डी दिया जाए तो उनके लक्षण में काफी कमी आ जाएगी। दरअसल एम्स के अध्ययन में खुलासा हुआ है कि 70 फीसदी दिल्लीवासियों में विटामिन डी की डेफिसिएंसी पाई गई है। देखा जाए तो विटामिन डी की कमी मस्तिष्क, रक्त संचार प्रणाली, हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, मांसपेशियों से संबंधित रोगों में दर्द अ‍ौर कमजोरी, फेफड़ों के रोगों में अस्थमा और सांस लेने में परेशानी, हड्डियों की कमजोरी और डायबिटिज जैसी बीमारियों का कारक है। एक समय था जब खासतौर से सर्दियों में तो तेल की मालिस कर धूप में बैठना नियमित आदत में शुमार होता था। नौकरीपेशा लोग अवकाश के दिन तो धूप में अवश्य बैठते थे। आज तो हालात यह हो गए हैं कि गर्मी के मौसम में पहली कावश्यक सनवर्न क्रीन को प्राथमिकता दी जाती है।

देखा जाए तो हम मंहगी से मंहगी दवाएं खाने के लिए तैयार है पर केवल और केवल 20 मिनट धूप का सेवन नहीं कर सकते। इसका परिणाम भी साफ है। हड्डियों में दर्द, फ्रेक्चर, जल्दी-जल्दी थकान, घाव भरने में देरी, मोटापा, तनाव, अल्जाइमर जैसी बीमारियां आज हमारे जीवन का अंग बन चुकी है। शरीर की जीवनी शक्ति या यों कहें कि प्रकृति से मिलने वाले स्वास्थ्यवर्द्धक उपहारों से हम मुंह मोड़ चुके हैं और नई से नई बीमारियों को आमंत्रित करने में आगे रहते हैं। यह आश्चर्यजनक लेकिन जमीनी हकीकत है कि केवल और केवल मात्र पांच प्रतिशत महिलाओं में ही विटामिन डी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। देश की 68 फीसदी महिलाओं में तो विटामिन डी की अत्यधिक कमी है। एम्स के अध्ययन से पहले एसोचैम द्वारा जारी एक रिपोर्ट में सामने आया है कि 88 फीसदी दिल्लीवासियों में विटामिन डी की कमी है। यह स्थिति दिल्ली में ही नहीं अपितु कमोबेस देश के सभी महानगरों में देखने को मिल जाएगी। इसका निदान हमारी जीवन शैली में थोड़ा से बदलाव करके ही पाया जा सकता है। पर इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिकता की दौड़ में हम प्रकृति से इस कदर दूर होते जा रहे हैं कि जल, वायु, हवा, धूप, अग्नि और ना जाने कितनी ही मुफ्त में प्राप्त प्राकृतिक उपहारों का उपयोग ही करना छोड़ दिया है। ऐसा नहीं है कि लोग जानते नहीं है पर जानने के बाद भी आधुनिकता का बोझ इस कदर छाया हुआ है कि हम प्रकृति से दूर होते हुए कृत्रिमता पर आश्रित होते जा रहे हैं। दरअसल हमारी जीवन शैली ही ऐसी होती जा रही है कि प्रकृति की जीवनदायिनी शक्ति से हम दूर होते जा रहे हैं। कुछ तो दिखावे के लिए तो कुछ हमारी सोच व मानसिकता के कारण।

विटामिन डी की कमी के कारण हजारों रुपए के केमिकल से बनी दवा तो खाने को हम तैयार है पर केवल कुछ समय का धूप सेवन का समय नहीं निकाल सकते हैं। हम स्कूलों में आयोजित मड उत्सव को तो धूम धाम से मनाने को तैयार है पर क्या मजाल जो बच्चें को खुले में खेलने के लिए छोड़ दे। मिट्टी में खेलने और खेलते-खेलते लग भी जाने पर प्राकृतिक तरीके से ही इलाज भी हो जाता है। तीन से चार दशक पुराने जमाने को याद करे तो कहीं लग जाने पर खून आता रहे तो वहां पर स्वयं का मूत्र विसर्जन करने या मिट्टी की ठीकरी पीस कर लगाने या चोट गहरी हो तो कपड़ा जलाकर भर देने या खून लगातार आ रहा हो तो बीडी का कागज लगा देना तात्कालिक ईलाज होता था। आज जरा सी चोट लगते ही हम हॉस्पिटल की और भागते हैं। यह सब तब होता था जब टिटनेस का सर्वाधिक खतरा होता था। यह कटु सत्य है कि योरोपीय देश प्रकृति के सत्य को स्वीकारते हुए प्रकृति की और आने लगे हैं। खाना खाने से पहले हाथ धोने की जो हमारी सनातन परंपरा रही है उस और विदेशी लौटने लगे हैं। अभियान चलाकर हाथ धोने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। क्योंकि अब समझ में आने लगा है कि बाहर से आने पर हमारे शरीर व हाथों में कितने नुकसान दायक वेक्टेरिया होते हैं और वह बिना हाथ धोए खाना खाने पर हमारे शरीर में प्रविष्ठ कर जाते हैं और हमारे सिस्टम को तहस नहस कर देते हैं। स्कूलों में मड उत्सव या रेन डे मनाने का क्या मतलब है, इनमें भी हम बड़े उत्साह से भाग लेते हैं जबकि बरसात में बच्चा जरा सा भीग जाए तो हम उसके पीछे पड़ जाते हैं। एक जमाना था तब पहली बरसात में क्या बड़े-क्या छोटे नहाकर आनंद लेते थे। यह केवल आनंद की बात नहीं बल्कि गर्मी के कारण हुई भमोरी का प्राकृतिक इलाज भी था। आज हम ना जाने कौन कौन से पाउडरों का प्रयोग करने लगते हैं। ऐसा नहीं है कि विटामिन डी की कमी या प्रकृति से दूर होने की स्थिति हमारे देश में ही है। अपितु यह विश्वव्यापी समस्या बनती जा रही है। कैलिफोर्निया के टॉरो विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में सामने आया है कि दुनिया में बड़ी संख्या में लोगों ने खुले में समय बिताना छोड़ दिया है। बाहर जाते हैं तब दुनिया भर के पाउडर, सनस्क्रीन और ना जाने किस किसका उपयोग करके निकलते है जिससे शरीर को जो प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्द्धकता मिलनी चाहिए वह नहीं मिल पाती है और यही कारण है कि आए दिन बीमारियां जकड़ती रहती है। यहां तक कि नई नई और गंभीर बीमारियों से ग्रसित होने लगे हैं।

कोरोना ने हमें बहुत कुछ समझाने का प्रयास किया है। हमारी हैसियत और ताकत को भी कोरोना ने आईना दिखा दिया है। जर्नल सांइटिफिक रिपोर्टस में प्रकाशित रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकल कर आया है कि गंभीर कोविड की स्थिति में भी विटामिन डी की बदौलत जीवन बचाया जा सकता है। आयरलैंड के ट्रिनटी कालेज, स्काटलैंड के एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी और चीन के झेजियांग यूनिवर्सिटी की एक टीम ने विटामिन डी को जीवन रक्षक कारगर के रुप में माना गया है। दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों ने यह माना है कि विटामिन डी की पूर्ति होने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और अन्य बीमारियां ही नहीं अपितु कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में कारगर माना गया है। कोरोना महामारी से बचाव के लिए अन्य कारगर उपायों के साथ ही दुनियाभर के चिकित्सकों ने एक राय से इम्यूनिटी बढ़ाने पर जोर दिया है। कोरोना के ईलाज और उसके बाद पोस्ट कोविड में चिकित्सकों ने जो दवाएं प्राथमिकता से लेने की सलाह दी है या जिन पर जोर दिया है उनमें विटामिन सी, विटामिन डी, जिंक और आयरन प्रमुख है। विटामिन, जिंक और आयरन की कमी को हम घर बैठे अपनी दिनचर्या और खान पान से पूरा कर सकते हैं। पर यह निराशाजनक स्थिति है कि हम मंहगी से मंहगी दवाएं खाने के लिए तैयार है पर अपनी दिनचर्या या खानपान में बदलाव लाने को तैयार नहीं है। यही कारण है कि हमारी केमिकल्स और महंगी दवाओं पर निर्भरता अधिक बढ़ने के साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होने लगी है।

दरअसल हमें दवाओं, केमिकल्स पर निर्भरता को कम कर प्रकृति से रुबरु होना होगा। इसके लिए सरकारों के साथ ही स्वंयसेवी संस्थाओं, गैरसरकारी संगठनों को जागरुकता अभियान चलाना होगा। प्रकृति से रुबरु होकर ही हम इम्यूनिटी बूस्ट कर सकेंगे और सही मायनें में प्राकृतिक रुप से इम्यूनिटी बूस्ट करके ही हम बीमारियों से जूझने में सफल हो सकेंगे।

**–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,**
**( वरिष्ठ लेखक )**

# पावटा में प्राचीन मंदिर के आस-पास नगर पालिका ने बनाया कचरा पॉइंट

**पावटा, (निसं)।** कस्बे में नदी में स्थित प्राचीन गोपाल भैया मंदिर के आसपास के क्षेत्र को पावटा प्रागपुरा नगरपालिका ने कचरा पॉइंट बना रखा है। जहां हर रोज नगरपालिका की

- **रोजाना पालिका की गाड़ियां कस्बे का कचरा मंदिर के आसपास डालती हैं**
- **कस्बे के कचरे के साथ-साथ मरे हुए मवेशियों को भी यहीं डाला जाता है**
- **बदहाली का शिकार प्राचीन प्राचीन गोपाल भैया मंदिर**

गाड़ियां कस्बे का कचरा एकत्रित करके मंदिर के आसपास के क्षेत्र में डालती हैं। इससे प्राचीन गोपाल भैया मंदिर अव्यवस्थाओं की भेंट चढ़ रहा है। प्राचीन मंदिर की कोई सुध नहीं की जा रही है।

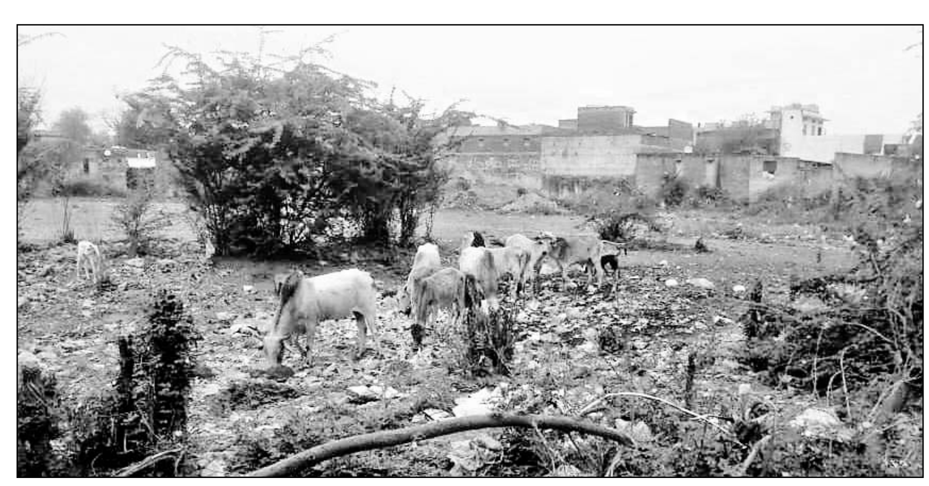

**पालिका द्वारा डाले गये कचरे में मुँह मारते गौवंश।**

मंदिर के आस पास नगरपालिका द्वारा कचरा प्वाइंट बनाकर कचरा फेंका जा रहा है। कस्बे के एकत्रित हुए कचरे के साथ-साथ मरे हुए मवेशियों को भी यहीं डाला जाता है। जिससे पूरे मंदिर परिसर में दुर्गंध बनी रहती है। इससे मंदिर में प्रवेश तो दूर की बात मुख्य गेट के बगल से गुजरना भी चुनौती बनी हुई है। एक तरफ मंदिर के आसपास में फैली अव्यवस्थाओं को लेकर ग्रामीणों ने सवाल उठाए तो वहीं दूसरी ओर मंदिर में फैली अव्यवस्थाओं को लेकर नगरपालिका ने भी चुप्पी साधी हुई है। वहीं पालिका द्वारा कचरा पॉइंट बनाने से श्रद्धालुओं की आस्था पर भी ठेस पहुंच रही है।

मंदिर महंत मोहनदास महाराज, केशवदास महाराज व गौ सेवकों ने बताया कि कचरे में सडे गले जानवर भी फेंके जाते हैं। वहीं गौवंश की दुर्दशा आम तस्वीर हो गई है। कभी भूख से मरती गाय तो कभी प्लास्टिक और कचरा खाती गाय जरूर दिख जाती है और तब याद आते है गोवंश को बचाने का दावा और वादे करने वाली सरकार। कथनी और करनी में बहुत सारा फरक तब साफ दिखाई पडता है जब अनाथ, बेसहारा घूमता गौवंश कचरे से गंदगी व पॉलिथीन खाने को मजबूर हैं। सुख-समृद्धि की प्रतीक रही भारतीय गाय आज कूडे के ढेर में कचरा और प्लास्टिक की थैलियां खाती है और फिर अपनी जान गवा देती है। लेकिन नगरपालिका ने मंदिर के आसपास कचरा डालना बंद नहीं किया है।

कई बार लिखित में नगरपालिका के अधिकारी व उपखंड अधिकारी को इस समस्या से अवगत करवा चुके हैं लेकिन आज तक इस समस्या का समाधान नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि जब तक समस्या का समाधान नहीं होता तब तक कचरा नहीं डालने दिया जायेगा। वहीं जिला कलेक्टर को भी ज्ञापन देकर मंदिर, गौशाला व नदी बहाव क्षेत्र में कचरा डालने का विरोध किया जायेगा।

# एस.आई. ने दिया दहेज प्रथा को बंद करने का संदेश

- **एस.आई. ने सवा रुपए और नारियल लेकर शादी की रस्में पूरी की**

**अनूपगढ़, (निसं)।** पुलिस के एसआई के द्वारा अपने विवाह में दहेज नहीं लेकर एक मिसाल पेश की है। अनूपगढ़ के गांव 2 के(बी) में रहने वाले मुकेश मेघवाल ने अपने विवाह में केवल सवा रुपया और नारियल लेकर विवाह की सभी रस्में पूरी की।

मुकेश मेघवाल के द्वारा अपने विवाह में दहेज नहीं लेने की शहर में चर्चा का विषय बना हुआ है। मुकेश का विवाह बीकानेर में रहने वाली शिल्पा के साथ संपन्न हुआ है। मुकेश मेघवाल का कहना है कि जब एक पिता अपनी बेटी की शादी कर देता है तो वह अपनी बेटी के साथ बेटी के पति को सब कुछ सौंप देता है, इसलिए उन्होंने अपने विवाह में दहेज नहीं लिया। मुकेश मेघवाल के द्वारा दहेज नहीं लेने पर पूरे समाज के लोगों ने मुकेश मेघवाल की प्रशंसा की।

मुकेश मेघवाल के पिता रामचंद्र ने बताया कि शिल्पा के पिता मजदूरी का कार्य करते है। विपरीत परिस्थितियों में शिल्पा की शिक्षा पूर्ण करवाई और आज शिल्पा बीकानेर में शिक्षा विभाग में एलडीसी के पद पर कार्यरत है। शिल्पा के पिता राजेन्द्र कुमार ने बताया कि जब उन्होंने अपनी बेटी के विवाह में स्त्री धन और सवा लाख नगद रुपए देने चाहे तो इस पर मुकेश मेघवाल ने दहेज नहीं लेने के लिए मना कर दिया। मुकेश मेघवाल के इस निर्णय से उन्हें और उनके परिवार को काफी खुशी हुई और मुकेश मेघवाल को सवा रुपया और नारियल देकर शिल्पा को विदा किया गया।

मुकेश मेघवाल बताया कि वह बीकानेर पुलिस थाने में एसआई के पद पर कार्यरत है। राजस्थान पुलिस में उनकी जॉइनिंग 2021 में हुई थी। उनके पिता ने भी उन्हें विपरीत परिस्थिति में पढ़ाया था और आज उन्हीं की बदौलत वह इस मुकाम पर पहुंचे हैं। समाज में दहेज बहुत बड़ी कुरीति बन चुका है। इस कुरीति को खत्म करने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए। उन्होंने अपने विवाह में दहेज नहीं लेकर एक नई परंपरा शुरू की है। मुकेश मेघवाल ने उम्मीद जताई है कि समाज के अविवाहित युवा भी बिना दहेज के अपना विवाह करेंगे।

# बिजली की तकनीकी खराबी के कारण कई घरों में लगी आग

**मसूदा, (निसं)।** मसूदा उपखंड क्षेत्र के ग्राम लोरड़ी में सोमवार को बिजली की तकनीकी खराबी के कारण यहां के कई घरों में आग लग गई, जिससे टीवी, फ्रिज सहित विद्युत उपकरण आदि जलकर राख हो गए।

घटना सोमवार को प्रात: 11 बजे की है। घटना से जुड़े तथ्यों के अनुसार आज कुछ देर के लिए विद्युत सप्लाई बंद थी। इसी दौरान किसान अपने खेतों में काम करने के लिए जाते वक्त विद्युत उपकरण बंद करके चले गए और करीब 11 बजे शुरू हुई विद्युत सप्लाई के साथ ही कई घरों में आग लग गई। शिवराज प्रजापत, दिनेश लोहार, अमरचंद शिवराज जाट सावत सिंह सहित कई घरों में लगी आग से सभी में भारी नुकसान हुआ है। शिवराज प्रजापत नामक व्यक्ति के घर में लगी आग ने तो इतना ताण्डव मचाया कि इस परिवार के लिए खाने के लिए 2 जून की रोटी का अनाज तक नहीं बच पाया। घटना की सूचना मिलने पर इस संबंध में विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के सहायक अभियंता त्रिलोक सिंह चौहान से जानकारी करने पर कहना था कि संबंधित कनिष्ठ अभियंता को मौके पर भेजा गया है। वहां से रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ पता चल पाएगा।

इस संबंध में संबंधित कनिष्ठ अभियंता अतुल जोशी से जानकारी करने पर उनका कहना था कि वे अभी घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं एवं घटना के कारणों की जांच की जाने से पहले पीड़ित परिवारों की मांग पर पहले उनके मकानों में हुए नुकसान की जानकारी लेने की मांग पर अभी मकानों में आग लगने की घटना की जानकारी ले रहे हैं। घटना किस कारण से हुई इस संबंध में कनिष्ठ अभियंता अतुल जोशी से पूछे जाने पर उनका कहना था कि पीड़ित परिवारों की मांग पर उनके मकानों की जानकारी लेने के बाद की जाने वाली तकनीकी जांच के बाद ही कुछ पता चल पाएगा।

## राशिफल

**पंडित अनिल शर्मा**

**मंगलवार 14 मार्च, 2023**

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, अनुराधा नक्षत्र प्रात: 8:13 तक, वज्र योग दिन 3:13 तक, विष्टि करण प्रात: 8:55 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से प्रात: 8:13 तक है। रवियोग प्रात: 8:16 तक है। भद्रा प्रात: 8:55 तक है। आज रांधा पुअआ है।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 9:39 से 11:08 तक, लाभ-अमृत 11:08 से 2:05 तक, शुभ 3:33 से 5:02 तक।

**राहूकाल:** 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:42, सूर्यास्त 6:31

**मेष**
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**वृष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

**मिथुन**
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**कर्क**
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

**सिंह**
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**कन्या**
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा।

**तुला**
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

**वृश्चिक**
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**धनु**
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

**मकर**
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

**कुंभ**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

**मीन**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।